International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 3, March 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ0 सुहासिनी श्रीवास्तव
असि0 प्रो0 डी0डब्ल्यू0टी0 कॉलेज
देहरादून।

किसी देश की शिक्षा उस देश की दार्शनिक – सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित होती है। भौतिकवादी देश, भौतिकवाद को बढ़ावा देने के लिए ऐसी शैक्षिक व्यवस्था को स्थापित करते हैं जिससे उनकी भौतिक उन्नति हो, उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य सांसारिक सुख, वैभव एवं समृद्धि की चाह एवं उसकी प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास करना। इसके विपरीत जीवन में मूल्यों को कदापि स्थान नहीं दे पाते या स्थान में भ्रमित रहते हैं। प्रश्न यहाँ पर यह उठता हे कि मूल्य क्या है? या मूल्य किसे कहते हैं या मूल्य का संरक्षण क्यों किया जाए? रोकीच के मतानुसार – "मूल्य व्यवहारों एवं क्रियाकलापों, अभिवृत्ति और विचारों को प्रभावित करने वाला एक मानक है। आज के वर्तमान संदर्भ में मूल्य की व्यवाहारिक परिभाषा श्रीवास्तव एवं राय (1999) के अनुसार "मूल्य व्यक्ति द्वारा आत्मसात किए गए चयनात्मक निर्देश है जिनके द्वारा वह किसी वस्तु या अनुभव से बँध जाता है, अर्थात् उसे स्वीकार करता है, या उसका विरोध करता है। वातावरण में उपस्थित अनेक वस्तुओं, विचारों, मार्गों एवं क्रियाकलाप में से कुछ स्वीकृत करता है एवं कुछ को अस्वीकृत करता है, जो व्यक्ति के व्यवहारों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

मूल्य व्यक्ति की सोच एवं व्यवहारों को नियंत्रित एवं निर्देशित करते हैं। मूल्य की व्यक्ति को सही–गलत, अच्छे–बुरे, करणीय–अकरणीय के संदर्भ में निर्णय लेने में सहायक रहते हैं। मूल्यों के पालन से व्यक्ति को संतोष, सुख एवं आनन्द प्राप्त होता है। मूल्यों के न पालन करने से विवेकशील व्यक्ति को पश्चाताप, दुःख एवं आत्मग्लानि का अनुभव होता

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है। मूल्य ही व्यक्ति के विचारों को संचालित, क्रियान्वित एवं सामाजिक प्रतिमानों में बांध कर रखते हैं। मूल्यों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सामान्यतः मूलय दो प्रकार के होते हैं –

(1) नैमित्तिक मूल्य (Instrumental) तथा

(2) आन्तरिक मूल्य (Intrinsic)

वे मूल्य जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सहायक होते हैं। वह नैमित्तिक मूल्य कहते जाते हैं। आन्तरिक मूल्य वे मूल्य हैं जिसके अन्तर्गत व्यक्ति किसी वस्तु या घटना, अनुक्रिया या विचार को आधार प्रदान करके जीवन को उत्कृष्ठ एवं उन्नत बनाने का प्रयास करते हैं। भारतीय संदर्भ में तीन निरपेक्ष मूल्यों यथा सत्य शिवम्, सुन्दरम् से लेकर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा चयनित 83 मूल्यों को व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण जाने गये मूल्यों को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया गया है –

1. आन्तरिक एवं सहयोगी मूल्य
2. सकारात्मक मूल्य एवं नकारात्मक मूल्य
3. उच्च एवं निम्न मूल्य
4. स्थायी एवं अल्पकालिक मूल्य
5. निष्पादकारी मूल्य
6. धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष पुरूषार्थ के संदर्भ में।

'भगवद् गीता' में धर्म को सभी मूल्यों का आधार कहा गया है। धर्म एवं कर्तव्यों के आधार पर ही मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए। भारतीय संविधान में ग्यारह आधारभूत कर्त्तव्यों की व्याख्या की गयी है जो कि मूल्यों में ही समाहित हैं, वे देशभक्ति, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यत्मिक–ज्ञान, पर्यावरण संरक्षण, विधि पालन, उत्कृष्ठता, नैतिकता इत्यादि।

वर्तमान परिवेश में मूल्यों के द्वारा आत्मचेतना को जागृत करके शिक्षक अपने विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित कर सकता है।

अतः इसके लिए परम आवश्यक है कि शिक्षा का उद्देश्य भारतीय दर्शन के अनुसार – 'आत्म साक्षात्कार– को ही स्वीकार करना होगा। आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भौतिकता की आँधी ने व्यक्ति को मूल्य–विहीन कर दिया है। अवसरवादिता,

भोग–विलासिता एवं चाटुकारिता से ओत–प्रोत व्यक्तित्व का स्वामी व्यक्ति बन गया है। व्यक्ति–व्यक्ति में अन्तःकलह, वैमनस्यता, शत्रुता, कटुता, ईष्या–द्वेष, शक्ति प्रदर्शन एवं असंतोष की प्रवृत्ति आज के भौतिक एवं भोगवादी युग कीर ही देन है। आज के विद्यार्थी में भारतीय मूल्यों का ज्ञान जैसे प्रेम, सहयोग, करूणा, विनम्रता, धैर्य, सहानुभूति, संतोष जैसे सद्गुणों का विकास करना होगा जिससे वह सर्वगुण सम्पन्न होकर सरल, संतुष्ट, संतुलित संज्ञानी बनकर स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण कर सके। 'मानव' में 'मानवता' के गुण समाहित करना ही आज के वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए चुनौती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्राचीन भारतीय मूल्यों को विकसित करने, उसके पाश्चातीयकरण से रोकने एवं भारतीयकरण के दिशा में ले जाने हेतु निम्नलिखित आयामों पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है वे हैं –

1. **शिक्षा का उद्देश्य** – प्राचीन भारतीय शास्त्रों में शिक्षा का उद्देश्य "सा विद्या या विमुक्तये" निश्चित किया गया है। सांसारिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञान, अविद्या, अपराविद्या और उसके साथ–साथ ज्ञान, विद्या, पराविद्या दोनों को ही शिक्षा में समुचित स्थान देने की बात कही गयी। यजुर्वेद में कहा गया है –

विद्या चा विद्यां च यस्तवेदोीायं सह
अविद्या मृत्यु तीत्वा विद्ययामृतमश्नतों

युजर्वेद – 40.41

अर्थात् अविद्या (विज्ञान) से संसार सागर को पार कर विद्या (ज्ञान) से अमरत्व प्राप्त किया जा सकता है। सांसरिक जीवन के दायित्वों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, गणित, ज्योतिष इत्यादि सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त किया जाना चाहिए जो लौकिक बंधनों से मुक्त कर आत्मानुभूति की ओर प्रेरित करें उपनिषद के 'श्रेयस' एवं 'प्रेयस' के ज्ञान द्वारा व्यक्तित्व और सामाजिक दोनों पक्षों के उत्थान द्वारा शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करने होंगे। सद्गुणों के विकास, धार्मिकता, चरित्र निर्माण, नैतिकता सामाजिक नियमों एवं कर्त्तव्यों का पालन एवं भारतीय संस्कृति का संरक्षण, पोषण एवं प्रसार एवं स्वानुशासन ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

2. <u>पाठ्यक्रम</u> – आज पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों के साथ–साथ संस्कारवान, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर भी विशेष बल देना चाहिए। विद्यार्थी को सभी विषय पढ़ाये जाने चाहिए, जिनसे उनका समग्र विकास हो सके। प्रचलित शिक्षा प्रणाली अर्थ एवं विज्ञान तक ही सीमित रह गयी है। वास्तविक ज्ञान के भाव में प्रतिस्पर्धा एवं मानसिक अशांति का ही वर्चस्व है। पाठ्यक्रम में पाश्चात्यीकरण के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग भारतीय दर्शन, चिंतन, एवं संस्कृति से दूर हो गया है। वे 'ज्ञान' के अभाव में 'विज्ञान' को ही सब कुछ समझ बैठते हैं। धन, वैभव और अधिक धन प्राप्त करने की चाह यही शिक्षा का लक्ष्य बन गया है। आवश्यकता आज के परिवेश में यह है कि पाठ्यक्रम का निरूपण भारतीय दर्शन के आधार पर ही होना चाहिए। पाठ्यक्रम को पूर्णतया सीखने और उसमें दक्ष होने की अनिवार्यता होनी चाहिए। चयनात्मक अध्ययन सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण होने के लिये किया गया हो, उसका निषेध होना चाहिए जिससे विद्यार्थी का जीवन सुखमय, शांतमय, एवं आनन्दमय हो सके। स्वस्थ एवं चिंतामुक्त वातावरण में अग्रसर हो सके।
3. <u>शिक्षा प्रक्रिया</u> – शिक्षा प्रक्रिया के अन्तर्गत स्व–अध्ययन एवं स्व–अनुशासन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। स्वतंत्र चिंतन व मौलिक चिंतन को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों के आत्मोत्थान में सहायक बनें। शिक्षक का विद्यार्थियों के साथ घनिष्ठ आत्मिक सम्बन्ध होना चाहिए। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी व्यक्तित्व, सामाजिक एवं संबंधों पर स्वस्थ विचार–विमर्श हो इस दिशा में अभिभावकों को भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक के प्रति सकारात्मक एवं सम्मानपूर्वक दृष्टिकोण विकसित करना होगा। शिक्षक आत्मज्ञान, आत्मचिंतन एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रेरित होने चाहिये। संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में परिवर्तन लाकर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव है। विद्यार्थी में मानवता के प्रति प्रेम–सम्मान, सामाजिक चेतना, नैतिक नियमों पर आधारित चरित्र, स्वानुशासन विकसित करना होगा। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, सीखने की चाह, मानवीय मूल्यों के प्रति प्रेम, सहयोग परोपकारिता एवं दृढ़ आत्मविश्वास ही शिक्षा के भारतीयकरण के लिये परम आवश्यक है। शिक्षण कार्य को एक प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए। विद्यार्थी को सीखने के लिये प्रेरित करना

चाहिए, उसे पढ़ाने के लिए शिक्षण नहीं होना चाहिए। खोजने एवं जानने की चाह होनी चाहिए। समूह शिक्षण अधिगम के लिए शिक्षक को प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों की जन्मजात जिज्ञासा प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में सीखने के लिये प्रेरित किया जाता है। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थियों का चिंतन एवं मनन का अभ्यास करना परम् आवश्यक है।

4. मूल्यांकन प्रक्रिया – भारतीय मूल्यांकन पद्धति का उद्देश्य त्रुटियाँ ढूंढना नहीं अपितु विद्यार्थियों की गुणों, उपलब्धियों को पहचानकर उसे पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित करना था। विद्यार्थियों की कमियों से उन्हें अवगत कराना चाहिये जिससे वह आगामी शैक्षिक मूल्यांकन में दूर कर सकें। अधिकांशतः मूल्यांकन औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूपों में होना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थी के दिन–प्रतिदिन क्रिया–कलापों का आलंकन करता है, मूल्यांकन का आधार विद्यार्थी का संपूर्ण व्यवहार होगा न कि जानकारी या पुस्तकीय ज्ञान।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन में विज्ञान और ज्ञान, अविद्या और विद्या, परा और अपरा विद्या का महत्व है, इसे केन्द्र में मानकर आज के शैक्षिक प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता है। मूल्यों की शिक्षा ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्षों पर दी जानी चाहिए। इस दिशा में सामाजिक संस्थानों का सहयोग आवश्यक है। आज के परिवर्तित युग में पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर पड़ रहा है। विकसित देशों के प्रतिस्पर्धा में हम भारतीय मूल्यों एवं दर्शन को मानसिकता में परिवर्तन लायें एवं भारतीय दर्शन, शिक्षा, संस्कृति एवं प्रणाली का सम्मान कर अपनी भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं दर्शन पर गर्व का अनुभव करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रस्तोगी कृष्ण गोपाल (2003) – शिक्षा के विविध आयाम
2. श्रीवास्तव एस0एस0 (1998) – भारतीय शिक्षा शास्त्र : विचार एवं क्रियान्वयन
3. पाण्डेय राम शकल (1998) – शिक्षा का दर्शनिक एवं सामाजिक आधार
4. आचार्य राममूर्ति (1992) – मूल्य पकर शिक्षा